



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 26 अंक: 40 बुलेटिन अवधि: 27-31 मई, 2017 दिन: शुक्रवार दिनांक: 26 मई, 2017

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	27-05-2017	28-05-2017	29-05-2017	30-05-2017	31-05-2017
वर्षा (मिमी0)	0	5	10	15	10
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	39	38	36	36	36
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	22	21	20	21
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	50	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	12	14	12	08	10
वायु की दिशा	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व

आगामी 28 से 31 मई को हल्की से मध्यम वर्षा होने तथा आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (19 से 25 मई 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से घने बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 37.0 से 39.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 22.1 से 27.0 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 49 से 76 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 26 से 41 प्रतिशत एवं हवा 3.9 से 10.0 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व- उत्तर-पूर्व व पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ मई माह में धान की मध्यम अवधि में पकने वाली प्रजातियों—रत्ना, पंत धान—12, पंत संकर धान—3, पी0एन0आर0—381, पंत धान—4, नरेंद्र—359, सरयू—52, नरेन्द्र संकर धान—2, पंत धान—16, पंत धान—18, पंत धान—23, पंत धान—24, पंत धान—26, पी0आर0—113, पी0आर0—114, पी0आर0—116, एच0के0आर0—47 आदि की नर्सरी 25 मई से 10 जून तक डालना चाहिए।
- ❖ नर्सरी हेतु प्रमाणित बीज अथवा स्वस्थ स्वयं उत्पादित बीज उपचार के बाद प्रयोग करना चाहिए।
- ❖ बीज दर 30, 35 एवं 40 कि0ग्रा0/है0 क्रमशः पतला, मध्यम मोटा एवं मोटा प्रजातियों हेतु उपयोग करें।
- ❖ जायद की सूरजमुखी में आवश्यकतानुसार हल्की हल्की सिंचाई करें ताकि पौधे गिरे नहीं तोतो से फसल का बचाव करे।
- ❖ बिहार बालदार सूड़ी से सुरक्षा हेतु क्वीनाल फॉस 25 ई0 सी0 की 1.0 लीटर दवा का छिड़काव करे।
- ❖ जैसिड की रोकथाम के हेतु मिथाइल-ओ-डिमेटॉन 25 ई0 सी0 की 1.0 ली0 दवा को 600—800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ उर्द, मूंग तथा लोबिया की फसल में इस समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। फलियों की तुड़ाई के बाद फसल को खेत में पलट दें ताकि ये खेत में हरी खाद का काम करे।
- ❖ गना में 7—10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें
- ❖ काले बग का प्रकोप हो तो फेन्थेएट 50 ई0सी0 के 1लीटर /हैक्टेयर या मोनोक्रोटोफास 36 एस0एल0 के 750 मिली या क्यूनालफास 25 ई0सी0 के 2 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ मई माह में खेत की मेड़ बन्दी कर जुताई कर के छोड़ दे। ग्रीष्मकालीन जुताई से खेत के कीटों एवं बीमारियों के लारवा एवं खरपतवार आदि के बीज नष्ट हो जाते हैं मेड़ बन्दी से वर्षा जल खेत में ही रहेगा तथा जल बहाव के साथ मिट्टी बहकर बाहर नहीं जाएगी।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ आवश्यकतानुसार उचित नमी बनाये रखने हेतु सिंचाई करते रहे।
- ❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में पत्ते सिकुड़ने की दशा में किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर व प्याज की फसल में हल्की सिंचाई करे।
- ❖ जिन किसान भाइयों ने प्याज की रोपाई 15—20 जनवरी के आस-पास की हो उनके कन्द तैयार हो चुके हैं। फसल में सिंचाई बन्द कर दे।
- ❖ जो किसान भाई लहसुन की फसल में सिंचाई कर रहे हो वह बंद कर दें। लहसुन के तैयार कन्दों को उखाड़ कर छाया में रखे तथा छोटे बन्दल बनाकर किसी शुष्क स्थान पर रखें जहाँ वायु का आवागमन हो उसको भण्डारित करे।
- ❖ फसल को रूच्छ रोग या एन्थोनेट के बचाव हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवा का 0.25 प्रतिशत घोल बनाकर 2—3 छिड़काव करे।
- ❖ भिण्डी में फलवेधक कीटों का बचाव हेतु सेविन (कार्बोलिक) 2 प्रतिशत का घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियों पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियों को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फँफूदी की बढवार दिखाई दे तो नियंत्रण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ भिण्डी की फसल में पत्तियों की नसे यदि पीली पड़ रही हो तो ऐसे पौधों को निकालकर नष्ट कर दे। तथा रस चूसने वाले कीड़ों के नियंत्रण के लिए किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियों पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।

- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ नाइट्रेट विषाक्तता होने पर पशु की श्वसन एवं नाडी दर बढ़ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई, मॉसपेशियों में ऐंठन व कमजोरी आ जाती है। इससे बचाव हेतु मेथिलीन ब्लू के 1 प्रतिशत विलयन की 50–100 मि0ली0 मात्रा सीधे ही नस में देना चाहिए।
- ❖ सायनाइड ग्रस्त चारा खाए हुए पशु को पानी नहीं पिलाना चाहिए तथा चारागाहों में चराने ले गये पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार, बाजरा, चरी की फसल न खाने दे।
- ❖ छोटे मुझाये हुए पीले व सुखकर ऐंठे हुए पौधों को चारे के रूप में उपयोग नहीं करे।
- ❖ गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियों में मेलाथियोन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
- ❖ विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायों का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियों से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतु शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
- ❖ अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार कराये।
- ❖ पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
- ❖ गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, दें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।

डा० आर० के० सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर